उत्तराखण्ड में टिहरी बांध की स्थिति का अध्ययन तथा वहां के लोगों पर प्रभाव

***वन्दना सिंघल**

प्रस्तावना– पर्यावरण एक व्यापक विषय है जिसके अर्न्तगत मनुष्य एवं पर्यावरण के मध्य अन्तप्रक्रियाओं (प्राकृतिक/पर्यावरणीय संसाधनों का विदोहन एवं उपयोग), इन अन्तप्रक्रियाओं से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं तथा उनके नियंत्रण एवं प्रबन्धन के सभी पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक पर्यावरण मे मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से उत्पन्न परिवर्तनों को आत्मसात् करने की सीमित क्षमता होती है। जब मनुष्य के आर्थिक कार्यों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में किये गये परिवर्तन होमियोस्टैटिक क्रियाविधि भी सहनशक्ति से अधिक हो जाती है तो कई प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो जात है। इन समस्याओं का समुचित हल एवं प्रबन्धन आवष्यक होता है। वास्तव में प्रबन्धन एक व्यापक विषय है जिसके अन्तर्गत विभिन्न विशयों के विषेशज्ञों यथाः पारिस्थितिकीविदों, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों, प्रशासकों आदि की अपनी अपनी भूमिका होती है। तथा प्रबन्धन के विषय में उनके दृष्टिकोण अलग अलग होते है।

पर्यावरण – धरातलीय सतह पर किसी निर्दिष्ट समयावधि में किसी स्थान के संघटकों (जैविक तथा अजैविक संघटक) तथा सामाजिक तत्वों के सकल योग को पर्यावरा कहते है।

विकास – सामान्य रुप में विकास परिवर्तन का लक्ष्य एवं प्रक्रिया है जिसका प्रमुख उद्देश्य है मानव समाज की जीवन षैली को बेहतर बनाना।

मानवकेन्द्रित दर्षिटकोण से विकास आर्थिक वृद्धि एवं समृद्धि के सन्दर्भ में मानव समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया है। विकास भी परिभाषा मे 'परिवर्तन' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थो में किया जाता है ताकि यह (परिवर्तन) भौतिक, सामाजिक एवं संगठनात्मक सकारात्मक परिवर्तनों को समाहित कर सकें ताकि आर्थिक वृद्धि, निर्धनता उन्मूलन आर्थिक एवं समाजिक असमानता उन्मूलन के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

पर्यावरण विशय अब जनसाधारण का विषय बन चुका है इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है क्योंकि पर्यावरण अवनयन तथा प्रदूशण विष्वस्तरीय चिन्ता का विषय बन गया है एवं समस्त मानव समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड गया है। हरितगृह प्रभाव में निरन्तर वर्षद्धि ओजोन परत मे अल्पता एवं ओजोन छिद्र के निर्माण खाडी युद्ध के भयंकर परिणाम आदि ने वैज्ञानिकों, प्रशासकों, शिक्षाविदों, सरकारों, जन साधारण आदि को भावी पर्यावरण प्रकोप एवं विनाष तथा सम्भावित सर्वनाष के प्रति सचेत कर दिया है। अतः अब यह आवश्यक हो गया है कि पर्यावरण के विभिन्न पक्षों एवं तथ्यों का अध्ययन किया जाय ताकि प्रौद्योगिक स्तर पर अति विकसित आर्थिक मनुष्य एवं पर्यावरण के बीच अन्तक्रियओं तथा पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण की प्रक्रियाओं को भलीभांति समझा जा सके। पारिस्थितिकीय संसाधनों का समुचित मूल्यांकन किया जा सके। पर्यावरण के प्रभावों का सही आकलन हो सके, प्रदूषण के निवारण के लिये समुचित कार्यक्रम एवं रणनीतियां बनायी जा सकें, तथा स्थानीय प्रादेशिक एवं विष्व स्तरों पर पारिस्थितिकीय संतुलन एवं पारिस्थितिक स्थिरता को बनाये रखने के लिये पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जा सकें। आज वैश्वीकरण से उत्पन्न कई संकटों से एक समय में हम हर मामले के रुप में प्रकृति के प्रतिमान से दूर जाने की जरुरत है। हम एक पारिस्थितिकी प्रतिमान को ले जाने की जरुरत है। और इस के लिए सबसे अच्छा शिक्षक खुद प्रकृति है।

पृथ्वी विष्वविद्यालय रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के राष्ट्रीय कवि और नोबेल पुस्कार से प्रेरित है।

टैगोर एक जंगल स्कूल के रुप में दोनों प्रकृति से प्रेरणा लेने के लिए और एक भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण बनाने के लिए पश्चिम बंगाल भारत में शांति निकेतन में एक अध्ययन केंद्र शुरु कर दिया। स्कूल शिक्षा का भारत के सबसे प्रसिद्ध केन्द्रों में से एक में बढ़ रही है। 1921 में एक विद्यालय बन गया ।

*शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, एम0बी0पी0जी0 कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

वन हमें सिखाता है शोषण और संचय के बिना प्रकृति के उपहार का आनंद कैसे इक्विटीं का एक सिद्धांत के रुप में है। आज सिर्फ टैगोर के समय के रुप में हम प्रकृति और स्वतंत्रता में सबके लिए जंगल की बडी जरुरत है।

"वन के धर्म" में टैगोर ने प्राचीन भारत के वनवासियों जो भारतीय षास्त्रीय साहित्य पर था उसके प्रभाव के बारे मे लिखा था। जंगलों में पानी के स्रोतों और हम में से सबकों लोकतंत्र के जीवन की आम वेब से जीविका ड्राइंग, जबकि दूसरों के लिए जगह छोड़ना सिखा सकते हैं कि वह जैव विविधता के भंडार है।

टैगोर ने मानव विकास के सर्वोच्च मंच के रुप में प्रकृति के साथ एकता को देखा। अपने निबंध "तपोवन" (पविश्रता के वन) में टैगोर लिखते है "भारतीय सभ्यता वन, नही षहर में उत्थान सामग्री और बौद्धिक के अपने स्रोत का पता लगाने में विषिश्ट किया गया है। आदमी भीड़ से दूर पेड़ और नदियों और झीलों के साथ में था। जहां भारत के सबसे अच्छे विचारो के लिए आए है। जंगल की शांति के द्वारा आदमी के बौद्धिक विकास में मदद मिली है। जंगल की संस्कृति भारतीय समाज की संस्कृति बन गयी है। जंगल से उत्पन्न हुई संस्कृति की दृष्टि और ध्वनि और गंध में मौसम से मौसम के लिए जंगल में खेलने पर हमेशा से रहे है। प्रजातियों से अलग है जो जीवन के नवीकरण की विभिन्न प्रक्रियाओं को प्रभावित कर दिया गया है। विविधता में जीवन की एकीकृत सिद्धांत लौकतांत्रिक बहुलवाद इस प्रकार भारतीय सभ्यता का सिद्धांत बन गया"।

यह पारिस्थतिक स्थिरता और लोकतंत्र दोनों का आधार है क्योंकि इसमें विविधता में एकता है। एकता के बिना विविधता संघर्श और प्रतियोगिता का स्रोत बन जाता है । विविधता के बिना एकता बाहरी नियंत्रण के लिए जमा हो जाता है। यह प्रकृति और संस्कृति दोनों का सच है। वन इसमें विविधता में एकता है और हम जंगल के साथ हमारे संबन्धों के माध्यम से प्रकृति के साथ एक जुट हो रहे है।

टैगोर के लेखन में, वन ज्ञान और स्वतंत्रता के स्रोत नही थे। यह सदभाव और पूर्णता की कला और सौंदर्यषास्त्र की सुन्दरता और आनन्द का स्रोत था। यह ब्रहमाड का प्रतीक है।

"वन के धर्म," मे कवि हमारे मन की फ्रेम "बिजली की खेती के माध्यम से या सहानुभूति के माध्यम से कहा है कि या तो विजय द्वारा या संघ द्वारा ब्रह्मांड के साथ संबन्ध स्थापित करने के हमारे प्रयासो का मार्गदर्शन करता है।" कवि का कहना है कि वन हमें संघ और करूणा सिखाता है। महान कवि रविन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा है कि "एक जंगल में कोई प्रजाति अन्य प्रजातियों की हिस्सेदारी है हर प्रजाति दूसरों के साथ सहयोग में खुद को बनाये रखती है। उपभोक्तावाद और संचय के अंत तक साथ रहने की खुशी की शुरुवात है"।

टैगोर ने लिखा है कि "लालच और करूणा विजय और सहयोग हिंसा कि सदभाव के बीच संघर्ष के भी जारी है। और हमें इस संघर्ष से परे एक रास्ता दिखा सकते हैं वो वन है। "

बांध क्यों बनाये जाते है–

सरकार के द्वारा समय समय पर देश के विभिन्न राज्यों में बांधों के निर्माण के कार्य सम्बन्धी परियोजनाओं को बनाया जाता है। आखिर सरकार के द्वारा बांध निर्माण का कार्य क्यों करवाया जाता है इसका उत्तर यह है कि हर देश की सरकार अपने देष का विकास करना चाहती है। देष के विकास के लिए विभिन्न परियोजनाओं को बनाती है।जिसमें एक बांध निर्माण परियोजना भी शामिल है। बांध के निर्माण के द्वारा देश एक फायदा तो यह होता है कि वह अत्यधिक मात्रा में बिजली का उत्पादन करने में सक्षम हो जाता है। जहां बांध बनाया जा रहा है वहां की जनता को उस क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध हो जाता है। तथा वहां की जनता को सिंचाई के लिए जल उपलब्ध हो जाता है। आदि ऐसे अनेक फायदे हैं जो बांध बनने के कारण वहां की जनता को होते हैं कुल मिलाकर राज्य देश तरक्की करता है।

उत्तराखण्ड में टिहरी बांध की आवश्यकता क्यों –

उत्तराखण्ड में टिहरी बांध की आवश्यकता का उद्देश्य अत्यधिक मात्रा में जलविद्युत का उत्पादन करना तथा सिंचाई करना आदि है। टिहरी बांध का निर्माण उत्तराखण्ड के टिहरी जिले में भागीरथी तथा भिलांगना नदियों के संगम के नीचे गंगा नदी पर किया गया है। भौमिकीय दृष्टि से यह क्षेत्र कमजोर क्षेत्र में आता है। क्योंकि भूकम्पीय घटनाओं की अधिक सम्भावना है। इस परियोजना की आवश्यकता टिहरी बांध के पीछे निर्मित विस्तश्त जलाशय में गंगा नदी की दो षीर्शवर्ती सहायक नदियों भागीरथी तथा भिलांगना के जल का संग्रह करना, जलविद्युत का उत्पादन तथा पष्चिमी उत्तर प्रदेश में सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराना है टिहरी बांध बनाने के पीछे सरकार की आवश्यकता बस यही थी कि बांध बनाकर उस राज्य का विकास किया जा सके। वहां के नागरिकों को रोजगार उपलब्ध हो सके अत्यधिक मात्रा में बिजली उत्पादन के जरिए बिजली की कमी की समस्या से निपटा जा सकें। सिंचाई के लिए प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध हो सके आदि।

उत्तराखण्ड में टिहरी बांध का निर्माण–

टिहरी बांध उत्तराखण्ड का सबसे ऊंचा बांध है। तथा यह एषिया का सबसे बडा बांध है। इसकी लम्बाई 260.5 मीटर 855 फीट लम्बाई 575 मीटर तथा चौडाई 26 मीटर है तथा आधार की चौड़ाई 1128 मीटर है। टिहरी बांध उत्तराखण्ड की भागीरथी नदी पर बनाया गया है। इस बांध के निर्माण का उद्देष्य अत्यधिक मात्रा में विद्युत उत्पादन करना आदि है। जब यह बांध बनाया गया था तब उत्तराखण्ड उत्तर प्रदेश का हिस्सा था। टिहरी बांध को बनने में काफी समय लगा। सन् 1978 में इसका निर्माण कार्य षुरू हुआ। बीच बीच में जन आंदोलन तथा जनता के विद्रोह, अनशन याचिका के कारणवश इसे रोकना पडा। बीच बीच में लम्बे अन्तराल तक रोक दिये जाने के कारण इस बांध को पूरा होने में सन् 1995 तक का समय लगा।

उत्तराखड में टिहरी बांध बनाने का उद्देश्य–

हर देष विकास चाहता है और विकास के नाम पर वहां की सरकार और प्रशासन जनता को क्या देता है। यह बात वह खुद ही समझ सकता है। टिहरी बांध को बनाने के पीछे भी सरकार का यही उद्देश्य था कि इसके द्वारा अत्यधिक मात्रा में बिजली का उत्पादन सम्भव हो सकेगा। जल की आपूर्ति भी की जा सकेगी जिससे स्थानीय क्षेत्रीय राज्य व देश की परेषानियों का समाधान हो सकेगा। लेकिन यह बात गौर करने लायक है कि देश व राज्य के विकास के लिए उस देश व स्थान की जनता की आवश्यकता व सुविधा को आधार नहीं बनाना चाहिए। उनकी सुख सुविधा को भेंट चढाकर देश की सरकार व प्रषासन कैसे विकास कर सकतें है। एक के कारण वहां के नागरिक की प्रगति ही राष्ट्र की प्रगति है।

टिहरी बांध बनने लोगों के जीवन पर इसका प्रभाव–

टिहरी बांध परियोजना की रूप –रेखा की तैयारी के समय से ही इसका विरोध प्रारम्भ हो गया था। जैसे ही इस परियोजना की भनक स्थानीय लोगों की लगी । लोगो में यह आशंका व्याप्त हो गयी कि भागीरथी नदी की घाटी में बसें गांव जलमग्न हो जायेंगें तथा वहां के निवासी विस्थापित हो जायेंगे।

सुरक्षा आधार– टिहरी बांध परियोजना तीन प्रमुख कारणों के फलस्वरुप विवादों में फंसी –

(1) इस क्षेत्र की भूकम्पीय दृष्टि से संवेदनशील तथा बांध की सुरक्षा की समस्या।

(2) पर्यावरण अवनयन तथा पारिस्थितिकीय असंतुलन।

(3) स्थानीय लोगों का विस्थापन एवं प्राचीन संस्कृति का निवारण।

पर्यावरणीय आधार– टिहरी बांध परियोजना से निम्न पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो जायेगी –

(1) टिहरी जल भण्डार का अवसादन।

(2) पर्वतीय घाटी पारिस्थितिक तंत्र के टिहरी जलभण्डार के कारण जलमग्न हो जाने के कारण पारिस्थितिकीय विनाष।

(3) पर्वतीय हिमनदों का निर्वतन आदि । पर्यावरणवादियों तथा विरोधियों का कहना है कि इस परियोजना के कार्यान्वयन के पहले इस परियोजना के पर्यावरणीय अधिप्रभाव का मूल्यांकन नही किया गया था।

पुनर्वास की समस्या–

टिहरी जलभण्डार के कारण 112 गांवों तथा टिहरी शहर के जलमग्न हो जाने से 1,25,000 लोग विस्थापित (बेघर) हो जायेंगे (हो गये) इस परियोजना के अर्न्तगत प्रत्यक्ष रुप से विस्थापित लोगों के पुर्नवास के लिए समुचित व्यवस्था की गयी है परन्तु बांध के समीपवर्ती पहाड़ी ढालों पर रहने वाले 9,800 ग्रामीण तथा 3,500 शहरी लोगों के पुर्नवास की ी आध ाार–कोई व्यवस्था नहीं है।

प्रतिरक्षा सम्बन्धी आधार

टिहरी बांध के विरोधियों का दावा था कि इस परियोजना के कारण देष की सुरक्षा खतरें मे पड सकती है। इनका कहना था कि भारत चीन अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बांध के स्थान से 50 किमी दूर है। अतः सामरिक दृष्टि से अन्तर्राश्ट्रीय सीमा के इतने करीब इतने बड़े बांध का निर्माण नही किया जाना चाहिए।

सुन्दरलाल बहुगुणा का कथन था 'हर जगह आदिवासी या पहाड़ी क्षेत्रों में बडे बांध बनाये जा रहे है। नगरों औद्योगिक प्रतिश्ठानों को बिजली प्रदान करने के लिए तथा अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न क्षेत्रों को सिंचाई के लिए जल तथा बिजली प्रदान करने के लिए लोगों को विस्थापित किया जाता है। यह अनैतिक है। स्थानीय वस्तुओं की कीमतों में अचानक वर्षद्धि होने से प्रभावित होते है। उनके विरल संसाधन यथा' लकड़ी, जल, ईधन आदि का विदोहन किया जाता है तथा उनके लिए कुछ नहीं छोड़ा जाता' (योजना अंक 34, संख्या 10,1990) ।

टिहरी बांध बने यह लोग नहीं चाहते थे क्योंकि जिस जगह ये बांध बनाया जा रहा था वहां लाखों की संख्या में लोग अपना जीवन यापन करते थे। इस बांध की वजह से इन लोगों को विस्थापित किया गया। जिससे उन लोगों को बहुत परेषानी का सामना करना पडा। यह बात हर कोई जानता है कि जिस मिट्टी पर बच्चा जन्म लेता है, उस मातष्भूमि से उसको कितना अपार प्यार होता है। लेकिन सरकार ने विकास के नाम पर उस टिहरी क्षेत्र में रहने वाले लोगों की भावनाओं पर कुठाराघात किया । उन्हे वहां से विस्थापित कर एक अलग नया टिहरी शहर बना दिया गया। सरकार चाहे कितनी भी

उन लोगों की सहायता करे लेकिन वह उनका जन्म भूमि से लगाव भावनायें व समर्पण तो नहीं दे सकती है। कहीं न कहीं सरकार ने लोगों की भावनाओं के साथ बहुत बडा खिलवाड किया है । सरकार चाहे जो भी कर सकती है। हर किसी को उसकी मातृभूमि से अलग करके नये क्षेत्र में विस्थापित कर सकती है। तो क्या फायदा। सविधान में वर्णित संवैधानिक अधिकारों तथा भारत को मिली स्वतंत्रता का जब लोग अपने ही देश में देश की जनता की भावनाओं और उनका उनकी जन्मभूमि से लगाव का सम्मान नहीं करती उन्हें जब चाहे जहां चाहे अपनी मर्जी से विस्थापित कर देते है तो फिर क्या फायदा इस तरीके से देश का विकास करने का। टिहरी में विस्थापित लोगों का दुखः उनके सीने में दबी हुई टीस अपनी जन्मभूमि से अलग होने का दर्द। क्या देखा है सरकार ने वहां जाकर उनका तो सिर्फ परियोजनाओं को बनाकर उनको मंजूरी देना है। स्थानीय लोगों के दुखः दर्द तकलीफ आर्थिक हानि से सरकार को क्या कोई मतलब नहीं है। जैसा कि मसहूर पर्यावरणविद सुन्दरलाल बहुगुणा भी कहते है कि 'यह हमारे आंसुओं के साथ बनाया गया बांध है'।

रोगों से जूझते टिहरी बांध के गांव–

दिनांक 06 / 10 / 2015 को हिन्दुस्तान अखबार में पर्यावरण कार्यकर्ता सुरेष भाई के आए लेख के अनुसार 'टिहरी बांध के पास बसे गांव उन समस्याओं के शिकार बन रहे है। जिनके बारे में सोचा नहीं गया था। टिहरी बांध के चारो ओर

बसे सौड,उप्पू, डांग, मोटणा, भैंगा,जसपुर, डोबरा,पलाम, भन्डियाना और घरवाल आदि गांवो में सितंबर की शुरुवात से ही नई समस्या खडी हो गई है। इन गांवों में मलेरिया और वाइरल बुखार का प्रकोप फैल रहा है। 7 – 8 सितम्बर को सौ से अधिक लोगों को तेज बुखार, सिर दर्द, बदन दर्द जैसी शिकायतों के कारण नई टिहरी जिला अस्पताल में भर्ती होना पडा। मरीजों की इतनी अधिक संख्या थी कि उन्हें वार्ड के बाहर भी लेटना पडा। भर्ती हुए मरीजों में दो लोगो की मौत भी हो गई।

इसका कारण है कि टिहरी झील का जलस्तर ऊपर बढने से झाडियों और अन्य स्थानों पर मच्छर पैदा हो गए है, जो झील से सटे ग्रामीण क्षेत्रों भारी परेषानी पैदा कर रहे है। झील के किनारे बहकर आई लकडी और अन्य गन्दगी भी इसका कारण है। झील के किनारे रहने वाले लोग पानी से दुर्गन्ध आने की शिकायत भी कर रहे है। यह दिक्कत आने वाले समय में और बढ सकती है क्योंकि बांध में लगातार बढ़ रहे 'गाद' के कारण उसका जलस्तर ऊपर उठ रहा है। भागीरथी और भिलंगना नदियों की 20 सहायक जल धारायं है। जहां से भूस्खलन जारी है। जिसके कारण टनों मलबा बांध में जमा हो रहा है। अनुमान है कि हर साल हर सौ वर्गकिलोमीटर झील में 16.53 हेक्टेयर मीटर मलबा जमा हो रहा है। इससे डेल्टा बनने के प्रमाण सामने आ रहे है।इन सच्चाईयों को वैज्ञानिकों ने पहले भी अपनी दर्जनों रिपोर्टो में खुलासा किया था पर तब उसे खारिज कर दिया गया। टिहरी बांध में समाहित भागीरथी और भिलंगना नदियों के किनारों पर अनेक स्थानों पर भूस्खलन क्षेत्र है। इनमें से कंगसाली डोबरा और स्यांसू के ऊपर नदी धारा पर स्थित भूस्खलन क्षेत्र प्रमुख है। इसी तरह रोला कोट के आस पास भूस्खलन क्षेत्र बन जाने की आशंका भी बताई गई थी। भिलंगना घाटी में तंदगांव, खांड, गडोलिया कई स्थान चिन्हित किये गये थे। इन सभी क्षेत्रों में इस समय भूस्खलन की समस्या पैदा हो गई है। हर साल बांध में पानी बढने और कम होने के प्रभाव से यहां के गांव अस्थिर हो गये है। उन्हे पुनर्वास की अपनी मांग सरकार तक पहुंचाने के लिए अदालत की षरण लेनी पडी है। दूसरी और टिहरी जल विकास निगम कई स्थानों पर अपने वैज्ञानिकों भूस्खलन क्षेत्र के उपचार के लिये भेजता है, लेकिन उनके जलाशय से उत्पन्न भूस्खलन को वे नहीं रोक पा रहे है।

टिहरी बांध पर 2000 मेगावट विद्युत उत्पादन के लिए 35 वर्ष में अरबों रुपये खर्च हो गए। लेकिन अभी तक एक 1000 मेंगावाट से ज्यादा विद्युत उत्पादन के प्रभाव नहीं मिले है। लेकिन स्थानीय नागरिकों के लिए इससे पैदा होने वाली समस्याएं बढ़ती ही जा रही है। यहां तक कि वे समस्याएं भी सामने आ रही है। जिनके बारे में पहले बहुत ज्यादा सोचा नहीं गया था।

निष्कर्ष–

इस बात को कोई इनकार नहीं कर सकता कि देश की प्रगति तथा खुशहाली के लिए देश की अपार जलषक्ति संसाधन का भरपूर उपयोग किया जाय परन्तु साथ साथ इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि जल संसाधनो के विदोहन तथा उपयोग करते समय प्राकृतिक पर्यावरण को भारी क्षति न होने पाये। टिहरी बांध बने या न बने यह विवाद तो अब समाप्त हो गया है क्योकि बांध का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है, परन्तु इतना तो निश्चित है कि अवसाद जनन की दर तथा टिहरी बांध जलभण्डार के अवसादन तथा टिहरी बांध एवं जलभण्डार के निर्माण से उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय समस्याओं का समुचित अध्ययन नहीं किया गया था। यह भी स्पष्ट है कि इस परियोजना के कार्यान्वयन के पहले पर्यावरण अधिप्रभाव का समुचित मूल्यांकन नही किया गया था। अंत में निष्कर्ष स्वरुप यही कहा जा सकता है कि सरकार का दायित्व सिर्फ कानून बनाना व उनकों मंजूरी देना ही नहीं है। उसे लोगों की मुख्य सुविधाओं का भी ध्यान रखना चाहिये। कोई येाजना बनाने से पहले सरकार को उस परियोजना से संबंधित बातों का व्यवहार में जाकर परीक्षण करना चाहिए। या करवाना चाहिये। जिससे वहां के नागरिकों पर इस परियोजना से पडने वाले प्रभावों का सरकार को पता चल सके। अगर सरकार वास्तव में अपने देश विकास चाहती है तो वह आम जनता की परेशानी को अपनी परेशानी समझकर ही आगे बढ सकती है। वर्तमान सरकान का नारा भी यह है कि सबका साथ सबका विकास। इसलिये सरकार को अपने देश व राष्ट्र के विकास के लिये आम जनता को भी अपने साथ लेकर चलना पढेगा तभी देश तरक्की व विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच पायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1) डॉ० सविन्द्र सिंह, पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन ।

2) विकीपीडिया से साभार।

3) The Tehri Dam Project –Coe.mse.ac.in/td.html

4) उपरोक्त।

5) टिहरी बांध (http://internationalriver.org/en/south-asia /indiatehri-dam-fact-sheet), द्वारा प्रकाशित फैक्टशीट से।

6) सुरेश भाई पर्यावरण कार्यकर्ता दिनांक 06/10/2015 को हिन्दुस्तान अखबार में छपा उनका लेख **रोगो से जुझते टिहरी बांध के गांव।**

7) वन्दना शिवा, वनों की जरुरत के लिए मैंने सबकुछ सीखा।